PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ३

दीदी, दीदी, रात को सूरज चाचा कहाँ छिप जाते हैं?

Author: Roopa Pai
Illustrator: Greystroke
Translator: Shobhit Mahajan

दीदी, दीदी, कभी-कभी मैं सोचता हूँ...
क्या सोचते हो मुन्ने राजा, तुम क्या सोचते हो?
मैं सोचता हूँ कि सूरज चाचा रात में कहाँ छिप जाते हैं?
तुम बताओ मुन्ने राजा, कहाँ छिप जाते हैं सूरज चाचा?
मैं सोचता हूँ, मैं सोचता हूँ...
बताओ भी न मुन्ने राजा, क्या सोचते हो तुम?

मैं सोचता हूँ कि
एक राक्षस,
काला भयानक राक्षस
रोज़ रात आने पर
सूरज चाचा को खा जाता है
अरे दीदी, तुमने तो देखा ही है
सूर्यास्त के समय आसमान कितना लाल हो उठता है
वह सूरज चाचा का खून ही तो है!

पर हमारे बहादुर और
शक्तिशाली सूरज चाचा
उस राक्षस से हर रोज़ लड़ते हैं,
और फ़िर, सुबह होने तक
उसके चंगुल से निकलकर
हर रोज़ पौ फटने पर हमारा स्वागत करते हैं।
देखा दीदी, मैं जानता हूँ
सूरज चाचा राक्षस के मुँह में सारी रात बिताते हैं।
कहो दीदी, ठीक कहा न मैंने?

शायद तुमने ठीक ही कहा
पर मैंने तो अपनी किताबों में
कुछ और ही पढ़ा है...
बताओ न दीदी, क्या पढ़ा है आपने
अपनी मोटी-मोटी किताबों में...
पहले तुम बताओ, मुन्ना। तुम क्या सोचते हो?
क्या और कोई कारण हो सकता है
सूरज के रात में छिपने का?
मैं सोचता हूँ, मैं सोचता हूँ...
बोलो न मुन्ना, क्या सोचा तुमने?

यह भी तो हो सकता है दीदी
जब हमारी पृथ्वी पर रात होती है
तब सागर की गहराइयों में
दिन होता हो
समुद्री गुफ़ाओं के बीच से
निकलती हुई जल परियाँ
शार्क मछलियों के साथ
नाचती हों।

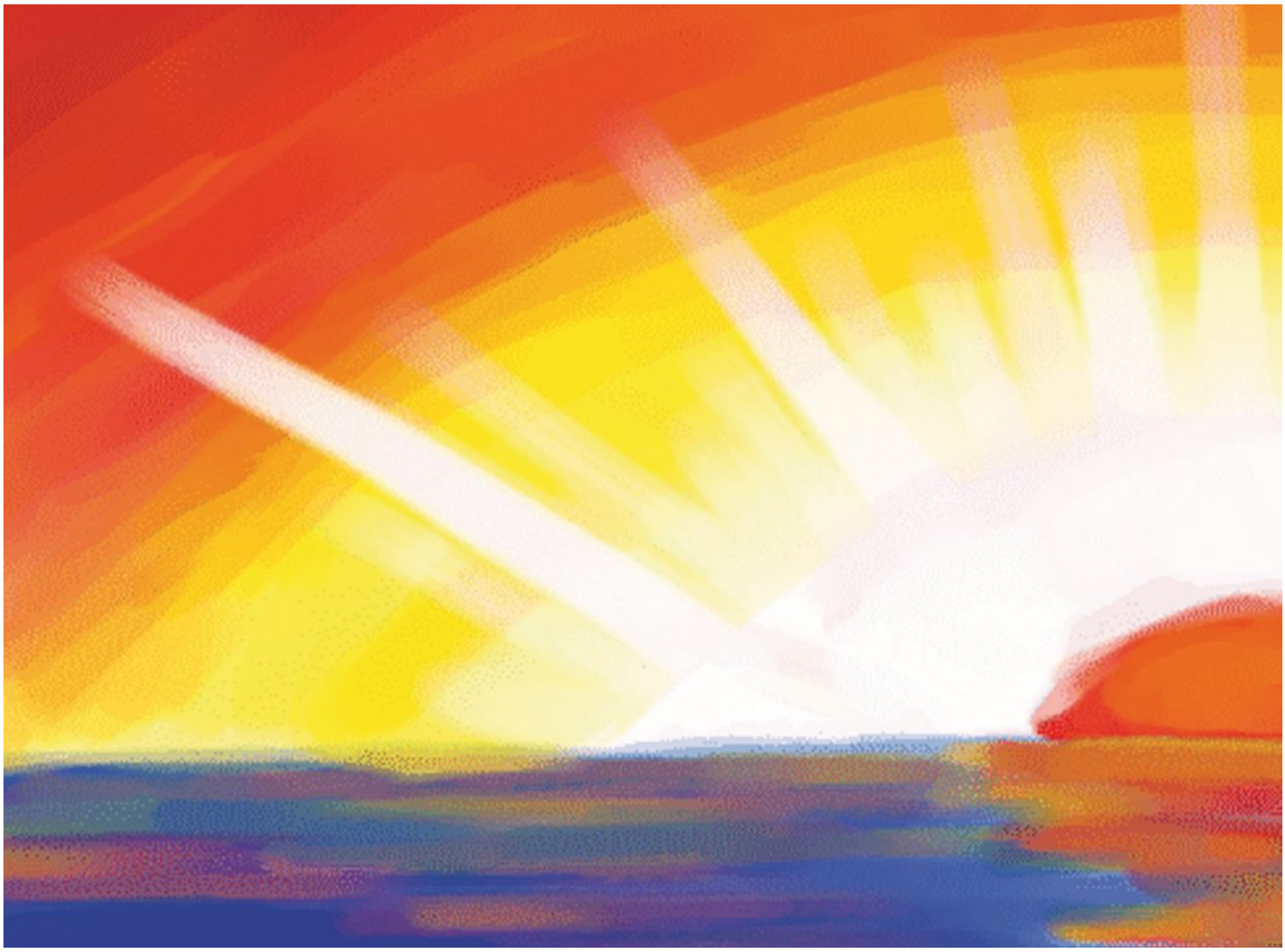

याद है न दीदी?
पिछली गर्मी में जब हम मुंबई गए थे,
तब शाम को चौपाटी पर सूरज
धीरे-धीरे समुद्र की गोद में छिप जाता था।
देखा था न दीदी?
हाँ दीदी, हो न हो,
सूरज चाचा रात को समुद्र में छिप जाते हैं और
अपनी सुनहरी किरणों से पानी को रोशनी देते हैं
कहो न दीदी, हूँ न मैं समझदार?

अरे हाँ भई नन्हें बीरबल।
समझदार तो तुम हो ही।
किन्तु, किताबों से तो मैंने
कुछ और ही सीखा है।
क्या सीखा है, दीदी, बताओ तो।
मुन्ना, पहले तुम बताओ। तुम क्या सोचते हो?

मैं सोचता हूँ, मैं सोचता हूँ...
बताओ भी न मुन्ने राजा, क्या सोचते हो तुम?
कभी तो मुझे लगता है कि सूरज चाचू के
रोज़ छिपने का कोई रहस्य ही नहीं है।
पिताजी की तरह, शायद वह भी
रोज़ शाम थक कर घर पहुँचते होंगे।

और चाची, माँ की तरह,
उन्हें खिला-पिला कर पिछले वाले कमरे में
तारों की चादर उढ़ा कर सुला देती होंगी।
(पर दीदी, अगर सूरज चाचा पिताजी की तरह खर्राटे भरते होंगे तब चाची को माँ की तरह बहुत परेशानी होती होगी?)

सुबह जब चाचा अंगड़ाई लेकर
अपनी सितारों की चादर समेटकर रखते होंगे
तब उनकी नींद से भरी लाल आँखें ही तो
हमें ऊषा की लालिमा लगती हैं
और सूरज चाचा जब तैयार होकर घर से निकलते हैं
तब ही तो हमें दिन दिखाई देता है।
ठीक ही तो है, दीदी।
सूरज चाचा रात में अपने घर आराम करते हैं।
है न यह ठीक?

मुन्ने राजा, क्या कहने तुम्हारी बातों के।
लेकिन मेरी स्कूल की किताबों में तो
कुछ और ही लिखा है।
दीदी, अब तो बता ही दो। क्या कहती हैं तुम्हारी रंग बिरंगी किताबें?
बताती हूँ, बताती हूँ। चलो इधर आओ और ध्यान से सुनो।
मैंने पढ़ा है कि...
क्या पढ़ा है दीदी?

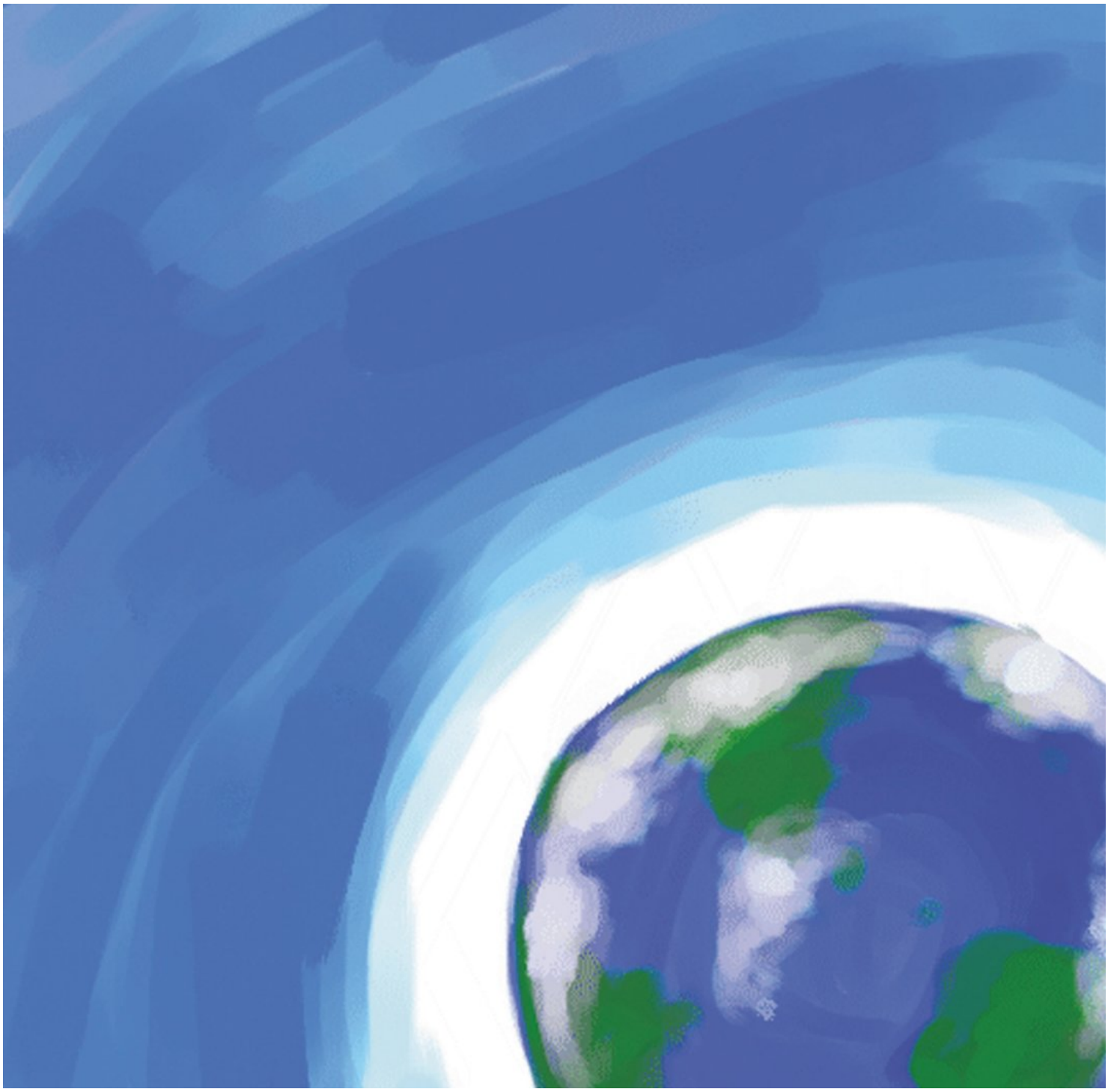

मैंने पढ़ा है कि
धरती गोल है-एक बड़ी गेंद के समान
और यह गेंद घूमती है तुम्हारे लट्टू के जैसे
(याद करो उस लाल लट्टू को
जो माँ तुम्हारे लिए हाट से लेकर आई थीं)
धरती लट्टू जैसी तेज़ नहीं घूमती

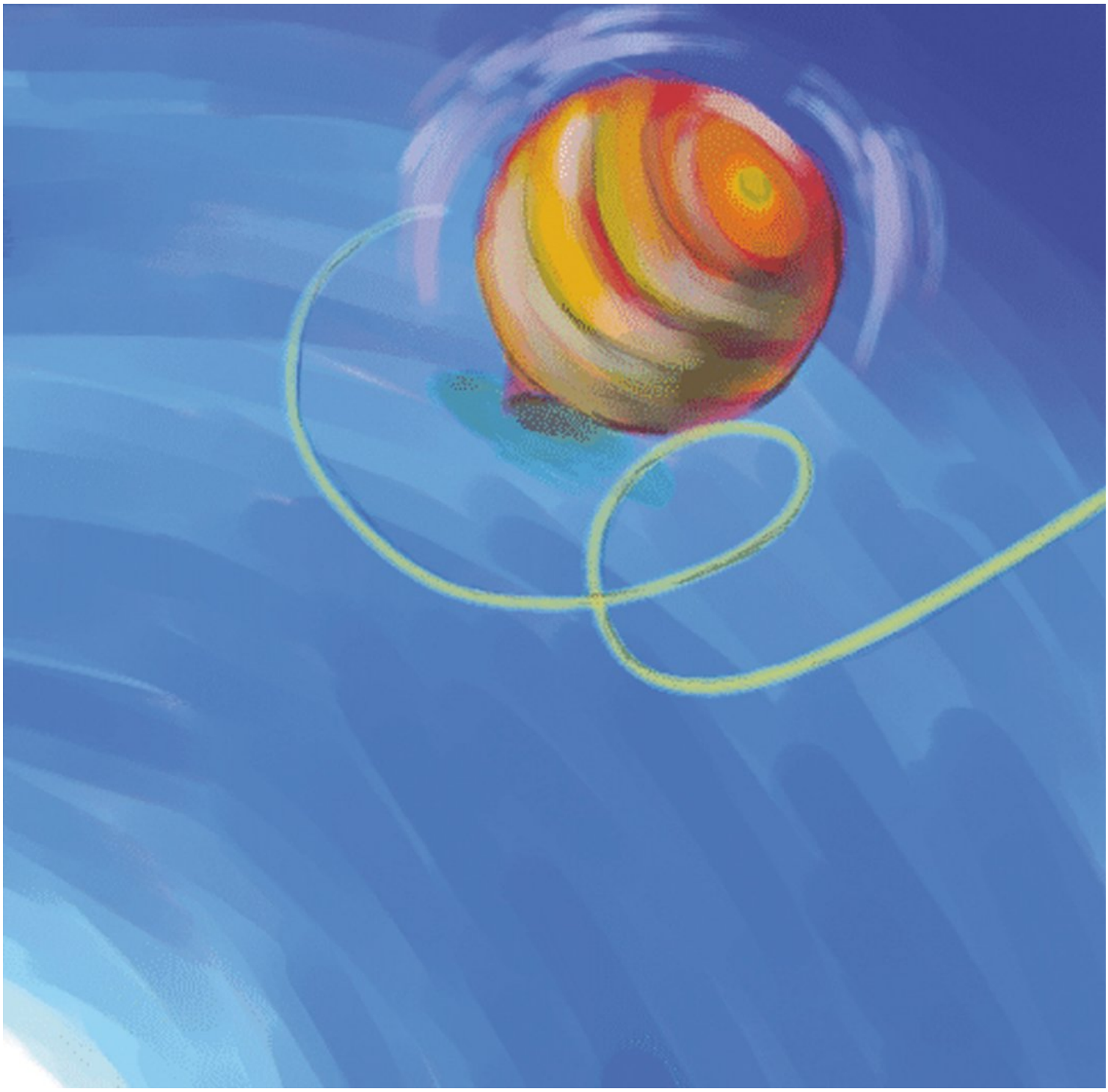

वह तो धीरे-धीरे सूरज के
चारों ओर घूमती है
एक चक्कर पूरा करने में उसे
एक दिन और
एक रात लग जाते हैं।

दीदी, तुम तो धरती के बारे में बात करने लगीं
मुझे सूरज के बारे में बताओ न।

बताती हूँ, बताती हूँ।
थोड़ा धीरज रखो, मुन्ने राजा।
मेरी पुस्तक में यह भी लिखा है कि
जब पृथ्वी का वह हिस्सा, जहाँ हम रहते हैं,
सूरज की ओर होता है
तब हमारा दिन होता है।

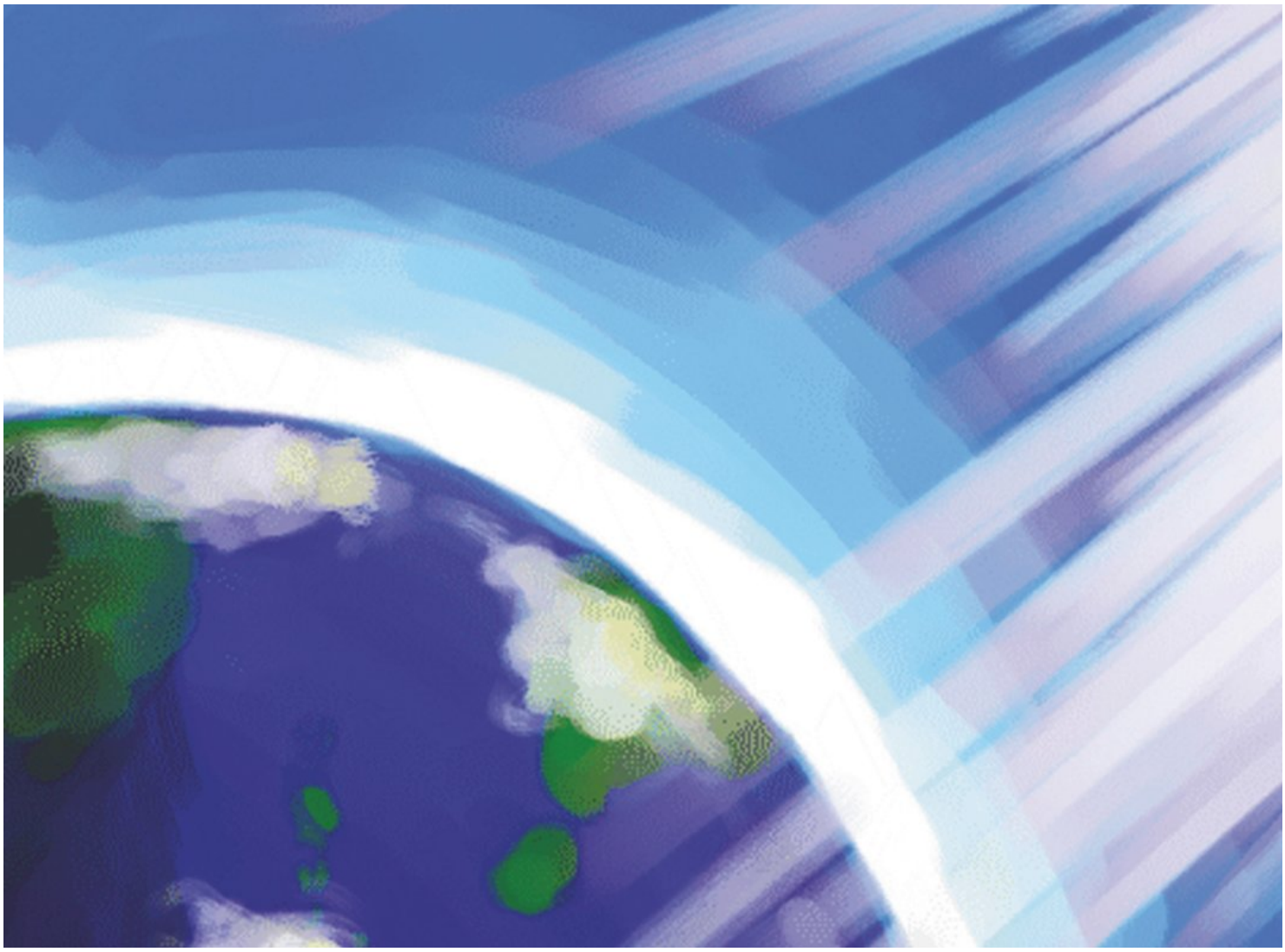

और जब पृथ्वी घूमकर
अपने दूसरे हिस्से को
सूरज की ओर पहुँचाती है
तब वहाँ दिन और फिर यहाँ,
हमारी रात होती है।
सच, दीदी!
अब यह तो मुझे पता नहीं मुन्ना
कि यह सच है कि नहीं
पर किताबों में तो
यही बताया गया है।

तो, प्यारे मुन्ने राजा, मेरी किताबों में तो ऐसा ही लिखा है
कि रात में सूरज पृथ्वी के दूसरे हिस्से को रोशनी देता है
और तब वह हमारी आँखों से ओझल हो जाता है।

सूरज रात को कहाँ छिप जाता है?

हमारी धरती एक गेंद की तरह है जो सौर्यमंडल के अपने आठ और साथी ग्रहों की ही तरह, सूरज के चारों ओर चक्कर काटती है। एक पूरा चक्कर एक साल में समाप्त होता है।

लेकिन धरती एक लट्टू की ही तरह अपने अक्ष पर गोल-गोल घूमती भी है-एक घुमाव, पूरे 24 घण्टे में पूरा होता है, यानि एक दिन और रात।
अब धरती का वह हिस्सा (आधा हिस्सा) जो सूरज की ओर होता है, वहाँ दिन हो जाता है उस समय, दूसरे आधे हिस्से पर रात होती है।

अब जब लट्टू की तरह धरती घूमती है, तो धीरे-धीरे अंधकार वाला हिस्सा सूरज की ओर आता है और वहाँ दिन हो जाता है। मतलब कि, धीरे-धीरे रात वाले हिस्से में दिन और दिन वाले हिस्से में रात हो जाती है।

यह प्रयोग करके देखो:

पृथ्वी के घूमने से दिन और रात कैसे होते हैं? यह समझने के लिये यह सरल अभ्यास करके देखो

तुम्हें इन चीज़ों की ज़रूरत पड़ेगी:

एक छोटी रबड़ की गेंद
एक बड़ी टॉर्च
कुछ रंगीन स्केच पेन
और एक दोस्त की

क्या करना होगाः

कल्पना करो कि रबड़ कि गेंद पृथ्वी है। स्केच पेन से उस पर विश्व का नक्शा खींचो। अब कल्पना करो कि टॉर्च सूरज है। अपने दोस्त से कहो कि टॉर्च का बटन ऑन कर दे। गेंद यानि पृथ्वी को सीधे टॉर्च की रोशनी (सूरज की किरणें) के सामने रखो जिससे कि भारत सूरज का सामना करे। धीरे-धीरे गेंद को घुमाओ। क्या दिखता है?

जब भारत सूरज के सामने है दोनों अमरीका के देशों में अँधेरा है। जैसे भारत सूरज के सामने से हट जाता है यूरोप व अफ्रीका धूप में आते जाते हैं। फिर जैसे जैसे पृथ्वी घूमती है अमरीका उजाले में आते जाते हैं और भारत में अँधेरा होता है। तब तक गेंद को घुमाओ जब तक भारत दोबारा सूरज के सामने आता है। जब भी पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है यही होता है। एक बार घूमने पर भारत (या पृथ्वी पर किसी और जगह) में एक दिन और एक रात होती है।

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: दीदी, दीदी, रात को सूरज चाचा कहाँ छिप जाते हैं? is translated by Shobhit Mahajan . The © for this translation lies with Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Sister, Sister, Where Does the Sun Go at Night?, by Roopa Pai . © Pratham Books , 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Pratham Books is a not-for-profit organization that publishes books in multiple Indian languages to promote reading among children. www.prathambooks.org

Images Attributions:

Cover page: Sun sleeping, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Boy and girl looking at the stars, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Angry demon, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Bright sunlight, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Girl thinking, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Mermaid in the ocean, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Sunset in the background, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Orange sun, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Boy thinking, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Sleeping Sun, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 11: Orange sunlight, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Girl and boy reading a book, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Earth, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Ball or eath spinning, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Ball or eath spinning, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Planet Earth , by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Bright white light in the sky, by Greystroke © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

दीदी, दीदी, रात को सूरज चाचा कहाँ छिप जाते हैं?

(Hindi)

दीदी से पूछने के लिए मुन्ने राजा के मन में न जाने कितने सवाल उठते रहते हैं। दीदी के पास जवाब हमेशा मिलते हैं क्योंकि वह हर समय कोई न कोई मोटी सी किताब पढ़ती रहती हैं। यहाँ मुन्ने राजा यह सोच कर हैरान हैं कि रात को सूरज कहाँ जाता है? क्या दिन भर काम के बाद जल परियों के लिये दिन करने चला जाता है? दीदी अन्त में सही उत्तर दे देती हैं पर मुन्ने राजा के मज़ेदार जवाब भी पढ़ने लायक हैं। आप भी बताइये आपको क्या लगता है रात को सूरज कहाँ जाता है?

This is a Level 3 book for children who are ready to read on their own.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!

This book is shared online by Free Kids Books at https://www.freekidsbooks.org
in terms of the creative commons license provided by the publisher or author.

Want to find more books like this?

https://www.freekidsbooks.org

Simply great free books -

Preschool, early grades, picture books, learning to read,
early chapter books, middle grade, young adult,
Pratham, Book Dash, Mustardseed, Open Equal Free, and many more!

Always Free – Always will be!

Legal Note:

This book is in CREATIVE COMMONS - Awesome!! That means you can share, reuse it, and in some cases republish it, but only in accordance with the terms of the applicable license (not all CCs are equal!), attribution must be provided, and any resulting work must be released in the same manner.

Please reach out and contact us if you want more information: https://www.freekidsbooks.org/about

Image Attribution: Annika Brandow, from You! Yes You! CC-BY-SA.
This page is added for identification.